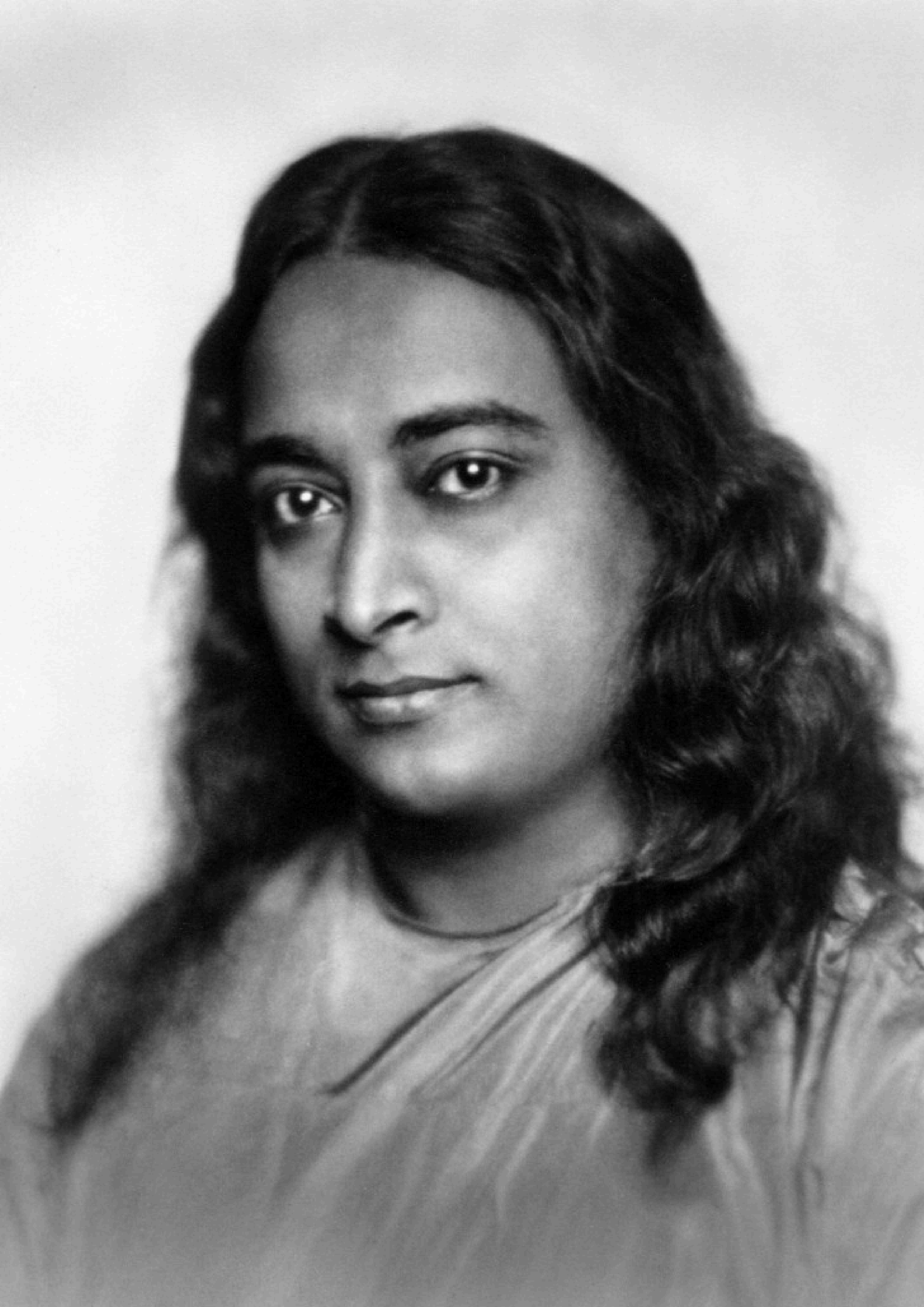

शिष्यत्व की प्रतिज्ञा

हे परमपिता, दिव्य माँ, मित्र प्रियतम ईश्वर, जीजस क्राइस्ट, बाबाजी कृष्ण, लाहिड़ी महाशय, स्वामी श्री युक्तेश्वरजी, परमहंस योगानन्दजी, मैं आप सब को प्रणाम करता हूँ।

दिव्य माँ, मैं आज आपके सम्मुख आया हूँ बहुत समय से आपकी शाश्वत ज्योति को खोजने के बाद, बहुत समय से शाश्वत सत्यों पर मनन करने के बाद, बहुत समय तक आपकी ओर आने वाले घुमावदार मार्ग का अनुसरण करने के बाद।

मैं स्वयं अपनी शक्ति के साथ चला हूँ, बहुत कम बार आपकी शक्ति के साथ। मैं इस विचार के साथ चला, "मैं जीवन से यह चाहता हूँ; ये उत्तर वह पथ-प्रदर्शन; यह या वह मार्ग," पर मैंने देखा कि, जब भी मैंने जीवन पर दावा किया, इसने मुझे टाल दिया। जब भी मैंने आपकी इच्छा का अनुचित लाभ उठाया वह मुझसे दूर चली गई।

आह, बहुत समय से, माँ, मैंने आपको स्वयं के लिए खोजा है, आपके प्रेम के लिए नहीं। अब मैं जानता हूँ कि, आपकी शक्ति को अपने साथ जोड़े बिना, उसे भरे बिना, मैं कभी भी आपको नहीं पाऊँगा। आपकी ही शक्ति, कृपा और अनन्त महिमा है।

प्रेमपूर्ण आस्था के साथ अब मैं आपको खोजना चाहता हूँ, आपके प्रकाश की उस किरण के माध्यम से, जो आपने मुझे प्रदान की है। मैं आपकी ओर बढूँगा, केवल अपनी शक्ति से नहीं बल्कि आपके अनन्त प्रेम की शक्ति से। मैं आपका हूँ, माँ, आप शाश्वत रूप से मेरी हो जाओ।

ॐ

मैं स्वयं को आपके कार्य के प्रति सेवा में तथा भक्ति से, और उस दिव्य प्रकाश की किरण के प्रति अर्पित करता हूँ जिसका प्रतिनिधित्व आपके माध्यमों, जीजस क्राइस्ट, बाबाजी कृष्ण, लाहिड़ी महाशय, स्वामी श्री युक्तेश्वरजी और परमहंस योगानन्दजी द्वारा हुआ है।

आत्म-बोध के इस परिवार में मुझे स्वीकार करें और मुझे भी, उनके द्वारा, अपने आशीर्वाद का यन्त्र बनाएँ। इस प्रकार, जैसे मैं ग्रहण करता हूँ, दूसरे भी ग्रहण करने के लिए आशीर्वाद पाएँ।

मैं अपनी शक्तियों को अपने गुरुभाईयों के साथ सम्मिलित करूँगा, जो धरती पर मेरे आध्यात्मिक परिवार हैं। मैं उनके साथ, विशेष रूप से जीवित प्रतिनिधियों और मेरे गुरुओं की दिव्य परम्परा के पथ—प्रदर्शकों के साथ सहयोग करूँगा।

मुझे अनुशासित करें, मेरा पथ-प्रदर्शन करें, मुझे पवित्र करें। मुझे अपनी किरण के साथ अनुकूलन करना सिखाएँ, जब तक, अन्ततः मैं प्रतिदिन ध्यान, सेवा और भक्ति द्वारा अपनी आत्मा को आपकी असीम आत्मा के साथ एक कर लूँ।

नाम

आनंद संघ आचार्य | दिनांक | Signature